ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I ISSUE-III AUG 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

"आवां "उपन्यास में स्त्री—विमर्श

प्रा.सुलभा शेंडगे

दयानंद कला महाविद्यालय,

लातूर.

.....

हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय नारी की विभिन्न समस्याओं को समाज के सामने रखा है। पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में स्त्री का हो रहा शोषण,इस शोषण की मुक्ति के लिए स्त्री छटपटा रही है,परंपरा एवं रूढियों को तोडना चाहती है। अपने अधिकार के लिए संघर्षरत स्त्री सफलतर प्राप्त करना चाहती है। स्त्री के इसी संघर्ष को प्रेरणा देने के लिए अनेक महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सशक्त महिला पात्र चित्रित किये है। स्त्री इस परंपरागत ढॉचे को दलना चाहती है और अपने हक को हासिल कर पुरूष के कंधे —से—कंधा मिलाकर चलना चाहती है। स्त्रीवाद का अर्थ मात्र पुरूषों का अर्थ मात्र पुरूषों का विरोध नही बल्कि अपने पूर्ण अधिकारों के साथ स्त्री पुन:प्रस्थापित होना चाहती है।

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में अनेक महिला उपन्यासकारों ने सशक्त स्त्री पात्रों को अपनी रचनोओं के माध्यम से गढने का प्रयास किया है। नारी को प्रेरणा देनेवाली प्रमुख महिला लेखिका है.कृष्णा सोबती,शिवाजी,सूर्यबाला,मृदला गर्ग,मालती जोशी,मृणाल पाण्डे,निरूपमा सेवती,प्रभा खेतान,मैत्रेयी पुषा,राजी सेठ,नासिरा शर्मा,चित्रा मुदगल आदि।

चित्रा मुदगल हिंदी साहित्य की उन लेखिकाओं में से एक है,जिनका साहित्य स्त्री—विमर्श का महत्वपूर्ण आधार है। इनके उपन्यास "एक जमीन अपनी,"गिलिगडु"और 'आवा' चित्रा मुदगल ने "एक जमीन अपनी"में विज्ञापन जगत में फॅसती महिला और उससे बाहर निकलने के लिए संघर्ष दिखाया है । गिलिगडु में लेखिका ने जीनके अनेक पक्ष सामने लाए है। आवां उपन्यास में मूलत: स्त्रीजीवन के समस्याएँ है, इसके साथ कामगार स्त्री की समस्या है।

लेखिका चित्रा मुदगल 'आवा' में दिखाया है स्त्री का हर स्थान पर हो रहा शोषण चाहे वह घर हो या घर से बाहर , स्त्री शिक्षीत हो या अशिक्षीत हो आवां में नारी के दुख—दर्द और नारी—मूक्ती के सवाल को केंद्र में रखा हैं। नमीता जैसी लडकी त्रासदी है। आवां में नमिता को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पडा है तथा यौंन उत्पीडन का शिकार होना पडा है। इस उपन्यास में महानगरीय जीवन में स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रण किया हैं। कामकाजी महिला को घर से बाहर निकलने के बाद हर जगह उसे फॉसने के लिए जाल बिछाए जाते हैं। यह उपन्यास कामकाजी महिलाओं को काम करनेवाले स्थानपर हो रहा शोषण,अन्याय,अत्याचार को केंद्र में लाता है। उसे औरत की तरह रहने कां कहा जाता है। क्षमा शर्मा के शब्दों में, ''मैं सामाजिक तौर पर एक मजबूत स्त्री देखना चाहती हूँ,जिससे कोई यह कहने की हिम्मत न करे 'औरत हो औरत की तरह रहा करो।'जहॉ स्त्री का जन्म लेना ही उसका अपराध न हो जाए।''१

नमिता पांडे मजदूर देविशंकर पांडे की बेटी है। उनपर जानलेवा हमला हुआ। जिससे वह अपाहिज बने । घर की सारी जिम्मेदारी नमिता पर आ गई । पिता के मित्र अण्णा

साहब उसी कामगार आघाडी में उस नौकरी देते हे । अण्णा साहब उस अपने जाल में फॅसाने का प्रयत्न करते है,“पिता नही,पिता जैसा हूँ । तुम्हारे देह से कोई खिलवाड नहीं करूँगा ।अपने देह से तो कर सकता हूँ । अपना हात मेरे हात में दे दो मैं यह भी हूँ ,हस सच से जब तुम्हारा साक्षात्कार हो गया है,तो उस मान लेने में आपति । नमिता इस तरह के अत्याचार से तंग आकर वह नाश्रैकरी छोडती है ।उसी बीच नमिता की मुलाकात अंजना वासवानी से होती है वह कहती है,”“कठिण परिस्थितियों मे नौकरी का लोभ छोड पाना स्वाभिमानी व्यक्ति के बूते की बात है। तुम सचमुच बहुत साहसी लडकी हो। ”

आभूषन व्यवससयी संजय कनोई नमिता का सानिध्य पाने के लिए अपनी पत्नि की हजार बुराइयॉ करता है । नमिता उसें मनही मन चाहने लगती है । मैडम वासवानी उस प्रशिक्षण के लिए हैद्राबाद भेजती है । वहॉ संजय कनोई उसे मिलने आता है । दोनों एक—दुसरे को चाहने लगते है और वह काफी करीत आते है।संजय उससे विवाह का वादा करता है।

कुछ महिनों के बाद डॉ.वनजा नमिता को बताती है कि,“तुम गर्भिणी हो..... तुम्हे चौथा महिना पुरा हो पॉचवा आरम्भ होने जा रहा है।” “संजय को नमिता बताती है कि वह इस बच्चे को जन्म नही देना चाहती तो संजय कहता है,“न....तुम मेरे बच्चे को हाथनही लगाओगी तेरह साल बाद.... तेरह साल बाद मै बाप बना हूँ।”वह उसे विवाह का वादा करता है अपनी पत्नि को तलाक देकर लेकिनउस अपना बच्चा चाहिए हर हाल में। यहॉ भी पुरूषी तंत्र है स्त्री को कोख पर नियंत्रण।उस बच्चा चाहिए अपना बच्चा।संजय उससे तुरंत शादी भी नही करता और न तो उसे गर्भपात करवाने के लिए तैयार होता है।नमिता रखैल बनकर नही रहना चाहती।नमिता बहुत मुश्किल दौर से गुजर रही है। वह निर्णय नही ले पा रही है ।

इसी बीच नमिता के लिए मुंबई से पवार का फोन आता है । पवाश्र नमिता को बताता है कि अण्णा साहब की हत्या हो गई है इस हादसे का इता गहरा सदमा उसे लगता है कि उसका गर्भ अपने आप गिर जाता है।नमिता संजय को गर्भपात की घटना बताती है।संजय बौखला जाता है और कहता है ,“झुठी.....प्राण ले लूँगा मै तुम्हारे...मुझे मेरा बच्चा चाहिए...बच्चा । जानती हो?बाप बनने के लिए मैने तुम्हारे उपर किना खर्च किया।उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हारे उपर पैसा पानी की तरह बहा सके?उसका जम्मा इतना भर था किवह मेरे पिता बनने में मेरी मदत करें। सौदे के मुताबिक अपना कमीशन खाए ।वह ऐसी पचासो लडकियों का परोस सकती थीकृकेवल पचहतर हजार में मुझे बाप बना सकती थी....मैं रंडियो से बाप नही बनना चाहता था...मुझे नहीं गंवारा थी ऐसी किराए की कोख,मुझे सिर्फ उस लडकी से औलादा चाहिए थी ,जो पेशेवर न हो....पवित्र हो जो मुझसे प्रेम कर सके। सिर्फ मेरे लिए मॉ बने । तेरह वर्ष बाद मैं बाप बना...अपने बच्चे का बाप। सिर्फ मेरे लिए मॉ बने।तेरह वर्ष बाद मैं बाप बना ....अपने बच्चे का बाप। उस औरत से मैं सचमुच प्यार करने लगा । उसी ने.....उसी ने मुझे धोका दिया ।मेरे बच्चे की जान ले ली ।मुझे बाप बनाकर तुम जीवन भर ऐशोआराम में से रह सकती थी ।“नमिता मॉडलिंग छोड कामगार आघाडी लौट रही है ।लेकिन वहॉ पर फिरकोई अण्णा साहब,पवार नही टकराएगा ।इसके लिए उस सचेत रहना पडेगा। चित्रा मुद्गल “आवा”की भूमिका में कहतकी है,“स्त्री की क्षमता को उसकी दे हके उपर उठाकरस्वीार न करनेवाले रूढ—रूग्णवाले समाज को बोध कराना आखिर किन कंधो का दायित्व होगा?”

संजय कनोई के साथ—साथ यहॉ अंजना वासवानी का भी सच उजागर होता है ।जो गरीत लडकियों को मदद का बहाना बनाकर उन्हे सपने दिखाकर किसी अमीर के बिस्तर तक

पहूँचा देती है । लेखिकाने इस उपन्यास में स्त्रियों से जुडे अनेक प्रश्नों को रखा है ।“आवा”में घर से बाहर हो रहा औरत का शोषण उसे तो रेखांकित करता ही है,उसके साथ परिवार में हो रहे शोषण की भी अभिव्यक्ति करता है ।

निषकर्ष:

“आवा”में घर से बाहर निकली कामकाजी महिला को समाज के शोषण का शिकार होना पडता है ।कभी वह शोषण बलपूर्वक किया जाता है तो कभी स्त्री को प्रेमजाल में फॅसाकर । स्त्री को फॅसाने के लिए पुरूष हर तरह के हतकंडे अपनाता है। “आवा”उपन्यास में चित्रा मुद्गल ने स्त्री से जुडे अनेक प्रश्नो को सामने लाया है । स्त्री को अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए खूद खडा किया है।“आवा”नारी के संघर्ष की गाथा है ।

संदर्भ सूचि:

१)स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य—क्षमा शर्मा ,पृ.२७

२)आवां —चित्रा मुद्गल,पृ. १४१

३)आवा—चित्रा मुद्गल ,पृ. १४३

४)आवा—चित्रा मुद्गल ,पृ.४९९

५)आवा— चित्रा मुद्गल ,पृ.५२३

६)आवा— चित्रा मुद्गल ,पृ.५३९

७)आवा—भूमिका में—चित्रा मुद्गल

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com